

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड - क

- प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6) 8
- 1950 में पुणे के संघ परिषद् शिक्षा वर्ग में एक दिन विशेष भोजन में जलेबी बनी थी। परम पूजनीय श्री गुरु जी उस दिन स्वयंसेवकों के मार्गदर्शन हेतु वर्ग में उपस्थित थे। भोजन के समय अधिकारियों की पंक्ति में आठ-नौ, स्वयंसेवकों को भोजन परोसने का दायित्व दिया गया। भोजन-मंत्र से पूर्व उन स्वयंसेवकों ने वितरण शुरू करा दिया, लेकिन उनमें से एक स्वयंसेवक, जिसके पास जलेबी की थाली थी, वितरण न करके चुपचाप बैठा रहा। परमपूज्य गुरु जी का ध्यान उसकी ओर गया। भोजन प्रारम्भ होने से पूर्व गुरु जी उसके पास गए और कहा - तुम कैसे बैठे हो? पंक्ति में वितरण करो। उस स्वयंसेवक ने संकोचपूर्वक गुरु जी से कहा - मैं चमार जाति का हूँ, पंक्ति में ऊँची जातियों के स्वयंसेवक भी बैठे हैं, उन्हें मैं कैसे परोस सकता हूँ?
- गुरु जी को उस स्वयंसेवक की बात बहुत बुरी लगी। उन्होंने उसका हाथ पकड़कर जलेबी की थाली थमाई, और सर्वप्रथम अपनी थाली में परोसने को कहा, फिर सब स्वयंसेवकों को देने के लिए कहा। गुरु जी के आत्मीय व्यवहार से उसकी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा। उसने पंक्ति में सभी को जलेबी परोसी।

1. स्वयंसेवक की प्रसन्नता का पारावार कब नहीं रहा?
2. गुरु जी का ध्यान किसकी ओर गया?
3. गुरु जी ने स्वयंसेवक से क्या कहा?
4. भोजन में जलेबियाँ कब और कहाँ बनी थीं और जलेबी बाँटनेवाला शांत क्यों बैठा था?
5. गुरु जी को कौन-सी बात बुरी लगी तथा उसकी बात सुनकर उन्होंने क्या किया?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1×3=3

‘हिमालय’

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !  
 साकार, दिव्य, गौरव विराट,  
 पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल !  
 मेरी जननी के हिम-किरीट !  
 मेरे भारत के दिव्य भाल !  
 मेरे नगपति ! मेरे विशाल !  
 कवि-रामधारी सिंह ‘दिनकर’

- (1) नगपति शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
- (2) मेरी जननी शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
- (3) प्रस्तुत कविता में से उचित शब्द का प्रयोग कर निम्नलिखित वाक्य पूरा करें -  
 "उसे उन ----- नेत्रों से एक ज्योति-सी निकल कर अपने हृदय में आती हुई मालूम हुई।"

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2×2=4

पुजारी ! भजन, पूजन, साधन, आराधना  
इन सबको किनारे रख दे।  
द्वार बंद करके देवालय के कोने में क्यों बैठा है?  
अपने मन के अन्धकार में छिपा बैठा, तू कौन-सी पूजा में मग्न है?  
आँखें खोलकर देख तो सही  
तेरा देवता देवालय में नहीं है।  
जहाँ मजदूर पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं,  
तेरा देवता वहीं चला गया है।

क) कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में क्या कहते हैं?

ख) कवि के अनुसार देवता कहाँ चले गए हैं?

#### खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

1×3=3

1. एक धमाके से चारों ओर चीख-पुकार मच गई। - रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।
2. व्यायाम करो। स्वस्थ रहो। (संयुक्त वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)
3. शेर दिखाई दिया सब लोग डर गए (सरल वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए :

1×4=4

1. तेजस ने भोजन कर लिया है।
2. बीरबल अकबर के मंत्री थे।
3. ताजमहल का सौंदर्य दर्शनीय होता है।
4. बहुत से लोग वहाँ जमा हो गए थे।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

1x4=4

1. शोभा भाग नहीं सकती। (भाववाच्य में)
2. बच्चे निबंध लिख रहे हैं। (कर्मवाच्य)
3. आज बच्चों द्वारा जगह-जगह पेड़ लगाए गए। (कर्तृवाच्य में)
4. बाढ़-पीड़ितों को सहायता दी। (भाववाच्य में)

प्र. 7 निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए :

1 x 4 = 4

1. घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता, धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता।  
(काका हाथरसी)
2. सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥  
करहिं विलाप अनेक प्रकारा। परिहिं भूमि तल बारहिं बारा॥  
(तुलसीदास )
3. श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे। सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥ संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े। करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥ (मैथिलीशरण गुप्त)
4. 'विष्टा पूय रुधिर कच हाडा  
बरषड़ कबहुं उपल बहु छाडा'

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

(1+2+2)

पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है..... बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं.... कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके

भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है! समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए.... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं कर सकता।

1. 'मैं' किसके लिए आया है?
2. अपनों का विश्वासघात मनुष्य पर क्या प्रभाव डालता है?
3. लेखिका के जीवन पर पिताजी का क्या प्रभाव पड़ा?

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

1. फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है?
2. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?
3. फ़ादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी?
4. वह कौन सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

यश है न वैभव है, मान है न सरमाया  
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।  
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,  
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।  
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-  
छाया मत छूना मन, होगा दुख दूना।

1. कवि जीवन में क्या कुछ पाने के लिए दौड़ता फिरा?
2. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' - का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में कवि ने किसे मृगतृष्णा कहा है?

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

1. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?
2. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?
3. लक्ष्मण के क्षमा माँगने पर भी परशुराम का क्रोध क्यों नहीं शांत हुआ?
4. आप अपने जीवन में मुख्य कलाकार की भूमिका निभाना पसंद करेंगे या संगतकार की? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्र.12. जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं? 4

### खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

बढ़ती जनसँख्या

अथवा

विज्ञापनों का महत्त्व

प्र. 14. विद्यालय के प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता या छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए : 5

अथवा

छोटे भाई को परीक्षा में सफलता पाने पर बधाई पत्र लिखिए : 5

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

ठंडी के मौसम में खाये जानेवाले चवनप्राश का विज्ञापन तैयार कीजिए।

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड - क

- प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6) 8
- 1950 में पुणे के संघ परिषद् शिक्षा वर्ग में एक दिन विशेष भोजन में जलेबी बनी थी। परम पूजनीय श्री गुरु जी उस दिन स्वयंसेवकों के मार्गदर्शन हेतु वर्ग में उपस्थित थे। भोजन के समय अधिकारियों की पंक्ति में आठ-नौ, स्वयंसेवकों को भोजन परोसने का दायित्व दिया गया। भोजन-मंत्र से पूर्व उन स्वयंसेवकों ने वितरण शुरू करा दिया, लेकिन उनमें से एक स्वयंसेवक, जिसके पास जलेबी की थाली थी, वितरण न करके चुपचाप बैठा रहा। परमपूज्य गुरु जी का ध्यान उसकी ओर गया। भोजन प्रारम्भ होने से पूर्व गुरु जी उसके पास गए और कहा - तुम कैसे बैठे हो? पंक्ति में वितरण करो। उस स्वयंसेवक ने संकोचपूर्वक गुरु जी से कहा - मैं चमार जाति का हूँ, पंक्ति में ऊँची जातियों के स्वयंसेवक भी बैठे हैं, उन्हें मैं कैसे परोस सकता हूँ?
- गुरु जी को उस स्वयंसेवक की बात बहुत बुरी लगी। उन्होंने उसका हाथ पकड़कर जलेबी की थाली थमाई, और सर्वप्रथम अपनी थाली में परोसने को कहा, फिर सब स्वयंसेवकों को देने के लिए कहा। गुरु जी के आत्मीय व्यवहार से उसकी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा। उसने पंक्ति में सभी को जलेबी परोसी।

1. स्वयंसेवक की प्रसन्नता का पारावार कब नहीं रहा?

उत्तर : गुरु जी के आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से स्वयंसेवक की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा।

2. गुरु जी का ध्यान किसकी ओर गया?

उत्तर : गुरु जी का ध्यान एक ओर चुपचाप जलेबी की थाली लिए बैठे स्वयंसेवक की ओर गया।

3. गुरु जी ने स्वयंसेवक से क्या कहा?

उत्तर : गुरु जी ने स्वयंसेवक से पहले अपनी थाली में जलेबी परोसवाई तथा फिर सबको जलेबी परोसने के लिए कहा।

4. भोजन में जलेबियाँ कब और कहाँ बनी थीं और जलेबी बाँटनेवाला शांत क्यों बैठा था?

उत्तर : 1950 में पुणे के संघ परिषद् शिक्षा वर्ग में भोजन के लिए विशेष जलेबी बनी थी। बाँटनेवाला इसलिए शांत बैठा था क्योंकि वह चमार जाति का था तथा ऊँची जातियों को परोसने में उसे संकोच हो रहा था।

5. गुरु जी को कौन-सी बात बुरी लगी तथा उसकी बात सुनकर उन्होंने क्या किया?

उत्तर : लड़के का यह कहना कि मैं जाति से चमार हूँ, पंक्ति में ऊँची जाति के बैठे स्वयंसेवकों को कैसे परोस सकता हूँ? गुरु जी को बुरा लगा, उसकी बात सुनकर उन्होंने सबसे पहले उससे जलेबी ली फिर दूसरों को परोसने के लिए कहा।



प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1×3=3

‘हिमालय’

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !  
साकार, दिव्य, गौरव विराट,  
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल !  
मेरी जननी के हिम-किरीट !  
मेरे भारत के दिव्य भाल !  
मेरे नगपति ! मेरे विशाल !  
कवि-रामधारी सिंह ‘दिनकर’

(1) नगपति शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर : नगपति शब्द हिमालय के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(2) मेरी जननी शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर : मेरी जननी शब्द भारत के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(3) प्रस्तुत कविता में से उचित शब्द का प्रयोग कर निम्नलिखित वाक्य पूरा करें -

"उसे उन ----- नेत्रों से एक ज्योति-सी निकल कर अपने हृदय में आती हुई मालूम हुई।"

उत्तर : "उसे उन दिव्य नेत्रों से एक ज्योति-सी निकल कर अपने हृदय में आती हुई मालूम हुई।"

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

2×2=4

पुजारी ! भजन, पूजन, साधन, आराधना

इन सबको किनारे रख दे।

द्वार बंद करके देवालय के कोने में क्यों बैठा है?

अपने मन के अन्धकार में छिपा बैठा, तू कौन-सी पूजा में मग्न है?

आँखें खोलकर देख तो सही

तेरा देवता देवालय में नहीं है।

जहाँ मजदूर पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं,

तेरा देवता वहीं चला गया है।

क) कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में क्या कहते हैं?

उत्तर : कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में कहते हैं कि वे इन सभी को एक तरफ रख दें।

ख) कवि के अनुसार देवता कहाँ चले गए हैं?

उत्तर : कवि के अनुसार देवता पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार करने वाले अर्थात् मजदूरी करने वाले मजदूरों के दिलों में चले गए हैं।

#### खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

1×3=3

1. एक धमाके से चारों ओर चीख-पुकार मच गई। - रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।

उत्तर : सरल वाक्य

2. व्यायाम करो। स्वस्थ रहो। (संयुक्त वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

उत्तर : व्यायाम करो और स्वस्थ रहो।

3. शेर दिखाई दिया सब लोग डर गए (सरल वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)  
उत्तर : शेर को देखकर सब लोग डर गए।

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 1x4=4

1. तेजस ने भोजन कर लिया है।

उत्तर : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक

2. बीरबल अकबर के मंत्री थे।

उत्तर : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मकारक

3. ताजमहल का सौंदर्य दर्शनीय होता है।

उत्तर : अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, एकवचन, पुल्लिंग

4. बहुत से लोग वहाँ जमा हो गए थे।

उत्तर : विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, अनिश्चित संख्यावाचक

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

1. शोभा भाग नहीं सकती। (भाववाच्य में)

उत्तर : शोभा से भागा नहीं जाता।

2. बच्चे निबंध लिख रहे हैं। (कर्मवाच्य)

उत्तर : बच्चों द्वारा निबंध लिखा जा रहा है।

3. आज बच्चों द्वारा जगह-जगह पेड़ लगाए गए। (कर्तृवाच्य में)

उत्तर : आज बच्चों ने जगह-जगह पेड़ लगाए।

4. बाढ़-पीड़ितों को सहायता दी। (भाववाच्य में)

उत्तर : बाढ़-पीड़ितों को सहायता दी गई।

प्र. 7 निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए : 1x4=4

1. घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता, धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता।

(काका हाथरसी)

उत्तर : हास्य रस

2. सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥

करहिं विलाप अनेक प्रकारा। परिहिं भूमि तल बारहिं बारा॥

(तुलसीदास )

उत्तर : करुण रस

3. श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे। सब शील अपना भूल

कर करतल युगल मलने लगे॥ संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत

पड़े। करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

उत्तर : रौद्र रस

4. 'विष्टा पूय रुधिर कच हाडा

बरषड़ कबहुं उपल बहु छाडा'

उत्तर : वीभत्स रस

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है..... बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं.... कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का

बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है! समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए.... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं कर सकता।

1. 'मैं' किसके लिए आया है?

उत्तर : 'मैं' मन्नू भंडारी के लिए आया है।

2. अपनों का विश्वासघात मनुष्य पर क्या प्रभाव डालता है?

उत्तर : अपनों का विश्वासघात मनुष्य को तोड़कर रख देता है। इससे मनुष्य शक्की, अहंकारी, क्रोधी और चिड़चिड़ा हो जाता है।

3. लेखिका के जीवन पर पिताजी का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : पिता का प्रभाव - लेखिका के जीवन पर पिताजी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे हीन भावना से ग्रसित हो गईं। इसी के परिमाण स्वरूप उनमें आत्मविश्वास की भी कमी हो गई थी। पिता के द्वारा ही उनमें देश प्रेम की भावना का भी निर्माण हुआ था।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2x4=8

1. फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है?

उत्तर : फ़ादर बुल्के पूरी तरह से भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर चुके थे। वे भारत को ही अपना देश मानते हुए यहीं की संस्कृति में रच-बस गए थे। वे हिंदी के प्रकांड विद्वान थे एवं हिंदी के उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उन्होंने हिंदी में पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त "ब्लू-बर्ड" तथा "बाइबिल" का हिंदी अनुवाद भी किया तथा अपना प्रसिद्ध अंग्रेज़ी-हिंदी कोश भी तैयार किया। उनका पूरा जीवन भारत तथा हिंदी भाषा पर समर्पित था। अतः हम यह कह सकते हैं कि फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

2. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

उत्तर : बेटे की मृत्यु पर भगत ने पुत्र के शरीर को एक चटाई पर लिटा दिया, उसे सफेद चादर से ढक दिया तथा वे कबीर के भक्ति गीत गाकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। उनके अनुसार आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहनि अपने प्रेमी से जा मिली। उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकता। इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया।

3. फ़ादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी?

उत्तर : फ़ादर बुल्के मानवीय करुणा से ओतप्रोत विशाल हृदय वाले और सभी के कल्याण की भावना रखने वाले महान व्यक्ति थे। देवदार का वृक्ष आकार में लंबा-चौड़ा होता है तथा छायादार भी होता है। फ़ादर बुल्के का व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा ही है। जिस प्रकार देवदार का वृक्ष लोगों को छाया देकर शीतलता प्रदान करता ठीक उसी प्रकार फ़ादर बुल्के भी अपने शरण में आए लोगों को आश्रय देते थे। हर व्यक्ति उनसे सहारा और स्नेह पा सकता था तथा दुःख के समय में सांत्वना के वचनों द्वारा उनको शीतलता प्रदान करते थे।

4. वह कौन सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर : एक बार स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका के कारण कॉलेज की प्रिंसिपल ने लेखिका के पिता को कॉलेज बुलाया जिससे सुनकर उनका आग-बबूला होना स्वाभाविक था। गुस्से में दनदनाते हुए वह कॉलेज पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्हें अपनी बेटी की नेतृत्व शक्ति का परिचय मिला जिसे सुनकर वह गर्व-युक्त होकर घर लौटे। वे लेखिका के प्रशंसा करते हुए कहने लगे कि सारे कॉलेज की लड़कियों पर तेरा इतना रौब है की तुम्हारे एक

इशारे पर वे क्लास छोड़कर मैदान में आ जाती हैं और नारे लगाने लगती हैं। पिताजी ने यह भी बताया कि वे बड़े गर्व से प्रिंसिपल को कहकर आर्यें हैं कि स्वतंत्रता की संघर्ष तो पूरे देश की पुकार है, इसे कौन रोक सकता है? अपने मुँह से पिताजी द्वारा ऐसी प्रशंसा सुनने के बाद लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया, न कानों पर।

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

यश है न वैभव है, मान है न सरमाया  
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।  
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,  
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।  
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-  
छाया मत छूना मन, होगा दुख दूना।

1. कवि जीवन में क्या कुछ पाने के लिए दौड़ता फिरा?

उत्तर : कवि जीवन में यश, वैभव और मान-सम्मान पाने के लिए दौड़ता फिरा।

2. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' - का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यहाँ कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक सुख के साथ के साथ दुःख भी लगा हुआ है। हर खुशी के बाद उदासी भी आती है। यदि आज हमें सुख मिलता है तो कल दुःख का सामना भी अवश्य ही करना है। अतः सुख के पीछे भावना व्यर्थ है।

3. उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में कवि ने किसे मृगतृष्णा कहा है?

उत्तर : इन पंक्तियों में कवि ने प्रभुता अर्थात् अधिकार को मृगतृष्णा कहा है।

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2x4=8

1. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर : 'कन्यादान' कविता नारी जागृति से संबंधित है। इन पंक्तियों गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। प्रेम रुपी नदी में पाँव डूबाकर भी उद्धव प्रभाव रहित हैं। वे श्री कृष्ण के सानिध्य में रहते हुए भी वे श्री कृष्ण के प्रेम से सर्वथा मुक्त रहे।

2. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर : 'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है -

- 1) जल बरसाने वाली शक्ति है।
- 2) बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकाँक्षा को पूरा करने वाला है।
- 3) बादल कवि में उत्साह और संघर्ष भर कविता में नया जीवन लाने में सक्रिय है।

3. लक्ष्मण के क्षमा माँगने पर भी परशुराम का क्रोध क्यों नहीं शांत हुआ?

उत्तर : लक्ष्मण के क्षमा माँगने पर भी परशुराम का क्रोध इसलिए शांत नहीं हुआ क्योंकि लक्ष्मण की क्षमा-याचना में पश्चाताप नहीं बल्कि उपहास का ही भाव था। लक्ष्मण परशुराम जी के साथ व्यंग्यपूर्ण वचनों का सहारा लेकर अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तनिक भी इस बात की परवाह किए बिना कि परशुराम कहीं और क्रोधित न हो जाएँ। लक्ष्मण ने ब्राह्मण पर सूर्यवंशियों द्वारा हाथ न उठाए जाने के कारण परशुराम की कटु बातों को सहन कर लेने की बात कह कर उनके अहं को और भी चोट पहुँचा दी। साथ ही उनके एक-एक वचन करोड़ों वज्रों के समान कहकर उनके क्रोध को और भी भड़का दिया।



4. आप अपने जीवन में मुख्य कलाकार की भूमिका निभाना पसंद करेंगे या संगतकार की? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : 'संगतकार' पाठ में लेखक की उपयोगिता पर प्रकाश डालता है।

यदि मुझे अपने जीवन में अवसर मिले तो मैं अवश्य ही संगतकार की भूमिका निभाना पसंद करूँगा। तब मैं अपनी सारी शक्ति मुख्य कलाकार को उठाने में लगा दूँगा। यदि वह अच्छा प्रदर्शन करेगा तो उसका श्रेय मुझे भी मिलेगा। उसके मान में मेरा भी मान होगा और उसके मान-सम्मान को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी।

प्र.12. जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं? 4

उत्तर : नार्गे एक कुशल गाइड था। वह अपने पेशे के प्रति पूरा समर्पित था। उसे सिक्किम के हर कोने के विषय में भरपूर जानकारी प्राप्त थी इसलिए वह एक अच्छा गाइड था।

एक कुशल गाइड में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है -

(क) एक गाइड अपने देश व इलाके के कोने-कोने से भली भाँति परिचित होता है, अर्थात् उसे संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

(ख) उसे वहाँ की भौगोलिक स्थिति, जलवायु व इतिहास की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

(ग) एक कुशल गाइड को अपनी विश्वसनीयता का विश्वास अपने भ्रमणकर्ता को दिलाना आवश्यक है। तभी वह एक आत्मीय रिश्ता कायम कर अपने कार्य को कर सकता है।

(घ) एक कुशल गाइड को चाहिए कि वो अपने भ्रमणकर्ता के हर प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो।

(ङ) गाइड को कुशल व बुद्धिमान व्यक्ति होना आवश्यक है। ताकि समय पड़ने पर वह विषम परिस्थितियों का सामना अपनी कुशलता व बुद्धिमानी से कर सके व अपने भ्रमणकर्ता की सुरक्षा कर सके।

- (च) गाइड को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भ्रमणकर्ता की रुचि पूरी यात्रा में बनी रहे ताकि भ्रमणकर्ता के भ्रमण करने का प्रयोजन सफल हो। इसके लिए उसे हर उस छोटे बड़े प्राकृतिक रहस्यों व बातों का ज्ञान हो जो यात्रा को रुचिपूर्ण बनाए।
- (छ) एक कुशल गाइड की वाणी को प्रभावशाली होना आवश्यक है इससे पूरी यात्रा प्रभावशाली बनती है और भ्रमणकर्ता की यात्रा में रुचि भी बनी रहती है।

### खंड - घ

- प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए :

10

#### बढ़ती जनसँख्या

बढ़ती हुई जनसँख्या हमारे देश में एक विकराल रूप लेती जा रही है। किसी जी देश की जनसंख्या यदि उस देश के संसाधनों की तुलना में अधिक हो जाती है तो वह देश पर अनचाहा बोझ बन जाती है। जनसंख्या बढ़ने से जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएँ - भोजन, वस्त्र और मकान भी पूरे नहीं पड़ते।

बढ़ती हुई जनसँख्या किस तरह से संसाधनों को निगलती जा रही है इसका सबसे बड़ा उदाहरण है बढ़ती हुई महँगाई। बढ़ती जनता को रोजगार देने के लिए, जंगलो को खत्म करने के बाद बढ़ता औद्योगिकरण अब हमारे गाँव में पैर पसार रहा है! फलस्वरूप कम्पनियों की फैक्ट्रियों अब गाँव की शुद्ध जलवायु में जहर घोल रही है वहाँ की उपजाऊ जमीन पर बसी फैक्ट्री अब गेहूँ के दाने नहीं वो कांच के गोलियाँ पैदा कर रही है! आबादी बढ़ने से स्थिति और भी अधिक भयावह हो जाएगी, तब जलापूर्ति, आवास, परिवहन, गन्दे पानी का निकास, बेरोजगारी का अतिरिक्त भार, महँगाई, बिजली जैसी आधारभूत संरचना पर अत्यधिक दबाव पड़ता नजर आयेगा।

सरकार को चाहिए कि वो कुछ गंभीर और सख्त नियम बनाए..जिससे जनसँख्या नियंत्रित की जा सके.. आज जनसंख्या के मामले मे राष्ट्र को

सही शिक्षा देने की सबसे ज्यादा जरूरत है क्योंकि शिक्षा, राष्ट्र की सबसे सस्ती सुरक्षा मानी जाती रही है। जन जागरण अभियान, पुरुष नसबंदी, गर्भ निरोधक गोलियाँ, देर से विवाह जनसंख्या को रोकने के उपाय है।

अथवा

विज्ञापनों का महत्त्व

आज के युग में विज्ञापनों का महत्त्व स्वयंसिद्ध है। आज विज्ञापन हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है सुबह आँख खुलते ही अखबार में सबसे पहले नज़र विज्ञापन पर ही जाती है। जूते से लेकर रूमाल तक हर चीज विज्ञापित हो रही है। विज्ञापन अपने छोटे से संरचना में बहुत कुछ समाए होते हैं। वह बहुत कम बोलकर भी बहुत कुछ कह जाते हैं। विज्ञापन एक कला है। विज्ञापन का मूल तत्व यह माना जाता है कि जिस वस्तु का विज्ञापन किया जा रहा है उसे लोग पहचान जाएँ और उसको अपना लें। निर्माता कंपनियों के लिए यह लाभकारी है। विज्ञापन अनेक प्रकार के होते हैं। सामाजिक व्यावसायिक आदि।

विज्ञापन के लाभ की बात करें तो हम यह कह सकते हैं कि आज विज्ञापन ने हमारे जीवनस्तर को ही बदल डाला है। आज विज्ञापन के लिए विज्ञापनगृह एवं विज्ञापन संस्थाएँ स्थापित हो गई हैं। इस प्रकार इसका क्षेत्र विस्तृत होता चला गया। कोई भी विज्ञापन टीवी पर प्रसारित होते ही वह हमारे जेहन में छा जाता है और हम उस उत्पाद के प्रति खरीदने को लालयित हो जाते हैं।

बाज़ार में आई नई वस्तु की जानकारी देता है। परंतु इस विज्ञापन पर होनेवाले खर्च का बोझ अप्रत्यक्ष रूप से खरीददार पर ही पड़ता है। विज्ञापन के द्वारा उत्पाद का इतना प्रचार किया जाता है कि लोगों द्वारा बिना सोचे-समझे उत्पादों का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। इन विज्ञापनों में सत्यता लाने के लिए बड़े-बड़े खिलाड़ियों और फ़िल्मी कलाकारों को लिया जाता है। हम इन कलाकारों की बातों को सच मानकर अपना पैसा पानी की तरह बहाते हैं। विज्ञापन हमारी सहायता अवश्य कर सकते हैं परन्तु कौन - सा उत्पाद हमारे काम का है या नहीं ये हमें तय करना चाहिए।

विज्ञापन से अनेक लोगों को रोजगार भी मिलता है। यह रोजगार एक विज्ञापन की शूटिंग में स्पॉट ब्वायज से लेकर बाजार में सेल्समेन तक उपलब्ध हो जाता है। अगर कोई कंपनी बाहरी देशों के लिए विज्ञापन बनाती है तो उसे विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है जिससे देश की विदेशी मुद्रा कोष में इजाफा होता है और देश की आर्थिक स्थिति बेहतर बनती है। विज्ञापन के लाभ व हानि दोनों हैं। यह हम पर निर्भर करता है कि हम उसका लाभ किस तरह ले और हानि से कैसे बचे।

प्र. 14. विद्यालय के प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता या छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए :

5

प्रधानाचार्य महोदय

लोकमान्य विद्या निकेतन

इन्दौर

दिनांक 15 अप्रैल, 2013

विषय - छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना।

मान्यवर महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा आठवी 'ब' की छात्रा हूँ। गत वर्ष से मेरे पिताजी का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उनका कामकाज ठप्प हो गया है तथा परिवार

में आमदनी का कोई अन्य साधन न होने के कारण स्थिति और भी खराब हो गई है। मेरी माताजी एक अशासकीय विद्यालय में शिक्षिका हैं पर उनके अल्प वेतन से परिवार का गुजारा हो पाना असंभव है।

मान्यवर, मैं पिछले तीन वर्षों से अपनी कक्षा में सर्वोच्च अंक लेकर उत्तीर्ण होती रही हूँ। आपसे अनुरोध है कि मुझे विद्यालय की ओर से आर्थिक सहायता या छात्रवृत्ति प्रदान करें जिससे मैं आगामी कक्षाओं की पढ़ाई जारी रख सकूँ।

आपकी इस कृपा एवं सहयोग के लिए मैं आजीवन आपकी आभारी रहूँगी।

सधन्यवाद

आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

रमा मालू

कक्षा - आठवी (ब)

अथवा

छोटे भाई को परीक्षा में सफलता पाने पर बधाई पत्र लिखिए :

5

छात्रावास (कक्ष क्र 2)

दिल्ली पब्लिक स्कूल

अहमदाबाद

5 मार्च, 2013

प्रिय मोहित

स्नेह।

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। कल ही पिताजी का पत्र मिला। घर के सभी लोगों की कुशलता के साथ-साथ तुम्हारा उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम भी ज्ञात हुआ। यह तुम्हारे कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम भविष्य में भी इसी तरह सफलता अर्जित करोगे। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि सफलता सदैव तुम्हारे कदम चूमे। पत्र के साथ ही पुरस्कार स्वरूप कहानी की किताबें भेज रहा हूँ। माँ और पिताजी को प्रणाम, चीनी को प्यार कहना।

तुम्हारा बड़ा भाई

अमोल

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए :

5

ठंडी के मौसम में खाये जानेवाले चवनप्राश का विज्ञापन तैयार कीजिए।

सौ-गुण चवनप्राश

ठंडियों में रखे सेहत का ख्याल  
सौ गुण वाले सौ-गुण चवनप्राश के साथ।